Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

# भोरमदेव के स्थापत्य कला में मिथुन प्रतिमाएं

[1]जगदेव राम भगत [2]डॉ. प्रदीप कुमार केशरवानी

[1]शोधार्थी, [2]प्राध्यापक व शोध निर्देशक

[1,2]इतिहास विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

[1]jrbhagat113@gmail.com

भोरमदेव छत्तीसगढ़ अंचल का एक महत्वपूर्ण कला तीर्थ है यह मंदिर कबीरधाम जिले के बैगा जनजाति बाहुल्य वनांचल में स्थित है। यह मंदिर स्थापत्य एवं सौंदर्य के लिए सुविख्यात है तथा अधिकतम सुरक्षित मंदिरों में से एक है। भोरमदेव स्मारक समूह के अंतर्गत स्थित मंडवा महल, छेरका देउर के नाम से अभीहित अन्य स्मारक स्थल भी सम्मिलित है। भोरमदेव के ऐतिहासिक महत्व के साथ वनांचल और पर्वत श्रेणियों का प्राकृतिक सौंदर्य इस स्थल के सौंदर्य पर्यटकों को आकर्षित करता है। भोरमदेव मंदिर दक्षिण कोशल के महत्वपूर्ण तथा शक्तिशाली राजवंशों में से एक फणिनागवंशी शासको के कला में लगभग 11वीं सदी ईसवी के उत्तरार्द्ध में निर्मित माना जाता है स्थापत्य काल के आधार पर भोरमदेव मंदिर मालवा के भूमिज शैली की संरचना है। यह मूलतः शिव मंदिर है। श्रावण मास, शिवरात्रि तथा अन्य धार्मिक पर्वों के समय यहां सर्वाधिक पर्यटक तथा आस्थावान दर्शनार्थी आते हैं। पर्यटन विभाग के द्वारा प्रति वर्ष होलिका दहन के पश्चात, निश्चित तिथि में भोरमदेव महोत्सव का आयोजन किया जाता है।

भोरमदेव मंदिर मूल रूप से शिव मंदिर है तथापि इस मंदिर के स्थापत्य कला में शैव, वैष्णव धर्म, शाक्य संप्रदाय के अतिरिक्त विविध मिथुन प्रतिमाओं का बाहुल्य है। इस मंदिर के रथिकाओं तथा जंघा अलंकरण में विविध प्रकार की मिथुन प्रतिमाएं संयोजित हैं। भारतीय कला में गुप्तोत्तर कालीन मंदिर स्थापत्य में मिथुन प्रतिमाएं प्रचुरता से देखने मिलती हैं। भारतीय कला से संबंधित शिल्प ग्रथों में मंदिरों के विमान में मिथुनबंध के उत्कीर्ण किये जाने का विधान मिलता है। अग्निपुराण के विवरण के अनुसार मंदिर के द्वार शाखाओं में मिथुन प्रतिमाएं निर्मित किए जाने का विवरण का उल्लेख है। मिथुन प्रतिमाएं अपने स्थूलतम भौतिक दृष्टि से सृष्टि के विकासक्रम का संकेत देती हैं। तथा अन्य दृष्टि से काम कला के विभिन्न भंगिमाओं को भी रूपायित

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

करती हैं। मिथुन प्रतिमाएं प्रगाढ़ आलिंगन में निबंद्ध प्रेमी युगल के परस्पर अनुराग का प्रस्तुतीकरण भी है तथा नायिकाओं के मुद्रा के माध्यम से विभिन्न प्रकार के नृत्य एवं आंगिक प्रदर्शन का माध्यम भी रहा है। मंदिरों में जंघा तथा प्रवेश द्वार अलंकरण में विविध नायिकाओं के अतिरिक्त मिथुन प्रतिमाएं भी स्थापत्य कला में प्रस्फुटित प्राप्त होती है। कामवृति से संबंधित मिथुन प्रतिमाओं का अंकन प्राकृतिक प्रकोप तथा अन्य अशुभ फलों के प्रतिरोधत्मक शक्ति के रूप में भी माना जाता है। कालांतर में मंदिर स्थापत्य कला में प्रदर्शित मिथुन युगल प्रतिमाओं में यौनाचार दिखाई पड़ता है साथ ही साथ तंत्र आधारित आचारों से प्रभावित विकृत यौनाचार को प्रदर्शित करने वाली प्रतिमाएं भी स्थापत्य कला में रूपायित होने लगती हैं। भोरमदेव मंदिर में मिथुन प्रतिमाओं के अनेक भेद देखने मिलते हैं दो पुरुष तथा एक स्त्री, दो स्त्री तथा एक पुरुष और कभी–कभी अन्य पुरुष या स्त्री भी समीप में देखने मिलती है जिनकी कोई भूमिका नहीं होती है तथापि कामशास्त्र एवं श्रृंगार रस आधारित संस्कृत एवं रीति युगीन काव्य साहित्य के विवरणों से इनका संबंध जोड़ा जा सकता है।

सातवाहन युगीन एक ऐसा ही काव्य ग्रंथ 'गाथा सप्तशती' जो प्राकृत भाषा में है, इसमें श्रृंगार रस से संबंधित अत्यंत सरस पद है। गाथा सप्तशती के एक पद (श्लोक) पर आधारित एक अत्यंत कलात्मक शिल्पकृति रानी दुर्गावती संग्रहालय जबलपुर में प्रदर्शित है। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस प्रतिमा के अधिष्ठान भाग पर गाथा सप्तशती का मूलपद दो पंक्तियों में उत्कीर्ण है। यह शिल्पकृति अलीकनिद्रा के नाम से अभिहित है जिसमें झूठीनिद्रा के बहाने नायक शयन कर रहा है और उसके शिरोभाग के समीप नायिका आकर खड़ी है तथा भविष्य में विलंब से नहीं आने का अभिनय भी प्रदर्शित कर रही है। रीति काव्य युगीन विहारी के सतसई काव्य में भी श्रृंगार रस से संबंधित अनेकोंनेक दोहे हैं। मुगलकालीन रंगीन चित्रों में नृत्य एवं संगीत के माध्यम से श्रृंगार रस के उज्जवल पक्ष को प्रदर्शित किया गया है पौराणिक ग्रंथों में भी श्रृंगार रस का मौलिक कल्पनाओं से युक्त नायक नायिकाओं की विविध भूमिकाएं मिलती है।

छत्तीसगढ़ में सिरपुर, डीपाडीह, महेशपुर, पाली, जांजगीर, आरंग, देव बलोदा, नारायणपुर, बारसूर, फिंगेश्वर आदि स्थित स्मारक स्थापत्यों में मिथुन युगल प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। इन्हीं प्रतिमाओं के साथ विभिन्न भाव भंगिमाओं को प्रदर्शित करती नायिकाएं भी रूपायित मिलती है। नायिकाओं के वर्ग के अंतर्गत सद्यः स्नाता, नारी के केशराशि से टपकते जल को चोंच से ग्रहण करते हुए हंस, पैरों से कांटा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

निकालती हुई नायिका, पैरों में नूपुर पहनती हुई नायिका, आंखों में अंजन लगाती हुई नायिका, ओष्ठ रंगते हुई नायिका, गुप्तांग प्रदर्शित करती हुई नायिका आदि विभिन्न मंदिरों में जंघा भाग पर शोभित है।

भोरमदेव स्थित प्राचीन देवालयों में प्रस्तर निर्मित पूर्वाभिमुखी शिव मंदिर मुख्य है। इस मंदिर में तीन ओर से अर्द्ध मंडप युक्त प्रवेश द्वार हैं तथा मंदिर के गर्भगृह का मुख्य प्रवेश द्वार में मिथुन प्रतिमाएं अप्रदर्शित हैं। इस मंदिर के जंघा भाग तथा रथिकाओं पर मिथुन प्रतिमाएं अंकित हैं। भोरमदेव मंदिर के दक्षिण दिशा की बाह्य भित्ति में एक पुरुष और दो स्त्री तथा एक स्त्री और दो पुरुष यौनाचार में संल्पित प्रदर्शित है। भोरमदेव मंदिर के सभा मंडप के बाहरी दीवाल पर एक पुरुष दो स्त्रियों के साथ यौनाचार में प्रदर्शित है।

दक्षिण दिशा में एक पुरुष, दो स्त्रियों के साथ यौनाचार में लिप्त है। भोरमदेव की उल्लेखनीय मिथुन आकृतियों में पुरुष तथा नारी आकृतियों में कलात्मकता का अभाव है। भोरमदेव स्थित मंडवा महल नामक देवालय में अनेकानेक मिथुन प्रतिमाएं प्रदर्शित है। इस प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा प्रसव करती हुई नारी उकडू बैठी हुई है तथा योनि मार्ग से शिशु को बाहर निकलते हुए दर्शाया गया है। एक अन्य प्रतिमा में विपरीत स्थिति में उकडू बैठै हुए कामक्रीड़ारत् पुरुष तथा नारी को चित्रित किया गया है। मंडवा महल लगभग 13वीं सदी ईस्वी में निर्मित देवालय है। यह मूलतः शिव मंदिर है इस मंदिर के तीन ओर कि बाह्य भित्तियों में विभिन्न प्रकार के मिथुन दृश्य अंकित हैं। इसमें काम विह्वल, तपस्वी साधक भी रूपायित हैं जो साधनाच्युत होकर भोग के अधीन हो चुके हैं। शिल्पियों के द्वारा इस प्रकार के दृश्यांकन के पृष्ठभूमि में तद्युगीन वामाचार प्रवृत्ति तथा साधनाच्युत समाज की झलक आभासित होता है।

भोरमदेव के मिथुन प्रतिमाओं में यौनाचार से संबंधित रूढ़िवादिता जन्य विकृति के साथ श्रृंगार परक भूमिका का प्रदर्शन महत्वपूर्ण है। ऐसे दृश्यों में कहीं–कहीं हास्य रस प्रकट है। ऐसे मिथुन दृश्य में शिल्पी की कल्पना शक्ति प्रस्फुटित है। उदाहरण स्वरूप एक प्रतिमा में सहवास से उदासीन पुरुष का केस पकड़कर स्त्री सहवास के लिए प्रेरित कर रही है तथा ऐसे ही एक अन्य दृश्य में सहवास से उदासीन स्त्री के केस खींचते हुये पुरुष उसे सहवास के लिए प्रेरित कर रहा है। एक ही पुरुष से सहवास के लिए उन्मुख दो नारियां सहवास से अनिच्छुक पुरुष को अपनी ओर खींचती हुई और इसके विपरीत एक ही स्त्री से सहवास के लिए इच्छुक दो पुरुष

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

स्त्री को अपनी ओर खींचते हुए दर्शित कलाकृति में मनोविज्ञान उच्छूखंलता तथा विकृत मानसिकता का प्रदर्शन दिखाई पड़ता है।

संक्षेप में भोरमदेव के स्थापत्य अवशेषों में प्रदर्शित मिथुन युगल प्रतिमाओं में जहां एक और जड़ता, वामाचार का प्रभाव तथा सामाजिक विकृति के लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं वहीं एक दूसरी ओर हमें इसमें अंर्तनिहित यौन विज्ञान के सूत्र भी दिखाई पड़ते हैं। भोरमदेव के मंदिर में रूपायित मिथुन प्रतिमाओं के माध्यम से काम जीवन में प्रभाव तथा अवहेलना से उत्पन्न विकृतियों को समझने के सूत्र झलकते हैं। भोरमदेव स्थित देवालय बैगा जनजाति बाहुल्य कबीरधाम जिले के तद्युगीन धार्मिक कला संस्कृति के साथ समसामयिक सामाजिक जीवन की श्रृंगारिक पक्ष को भी स्पर्श करते हैं। मिथुन प्रतिमाओं के माध्यम से मानव जीवन में यौनाचार के महत्व तथा प्रभाव को समझने और परखने के लिए कामशास्त्र आधारित यौन विज्ञान के प्राचीन ग्रंथ, साहित्य के साथ–साथ प्राचीन शिल्प कला का अध्ययन समाज में व्याप्त विकृत मनोवृतियों को सुलझाने में कुछ अंशों में अवश्य सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ –

1. सतसई–बिहारी
2. गीत–गोविंद
3. गाथा–सप्तशती
4. खजुराहो में काम और दर्शन, डा. महेन्द्र वर्मा
5. उत्कीर्ण लेख, बालचन्द्र जैन
6. भोरमदेव, डॉ. जी.के.चन्द्रौल

––0:0––

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

स्नाधा नायिका

शिशु को जन्म देती हुई नारी

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-1 | Jan-2024 | Page 44-51

मिथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा

मैथुन प्रतिमा